

धर्मामृत सागार (फोल्डर नं. ००१०१७)
सम्पादन-अनुवाद – सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री

मुख्य टाइटल

प्रधान सम्पादकीय

प्रस्तावना

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय -----	१-३९
मंगलपूर्वक प्रतिज्ञा -----	१
सागारका लक्षण -----	२
प्रकारान्तरसे साकारका लक्षण -----	३
सम्यक्त्व और मिथ्यात्वकी महिमा -----	५
मिथ्यात्वके भेद और उनका प्रभाव -----	६
सम्यग्दर्शनकी सामग्री -----	७
सच्चे उपदेष्टाओंकी दुर्लभता -----	८
भद्रका लक्षण -----	९
गृहस्थधर्मका पालक कौन-----	१०
सम्पूर्ण सागारधर्म -----	२१
असंयमी सम्यग्दृष्टिका महत्त्व -----	२४
गृहस्थको धर्म, यश और सुखका भी उपभोग करना चाहिए -----	२५
सम्यक्त्वके अनन्तर देशसंयम धारण करनेकी प्रेरणा-----	२९
प्रतिमाधारी श्रावकका अभिनन्दन -----	३१
ग्यारह प्रतिमा -----	३२
जिनपूजा और दानके भेद -----	३४
पक्ष, चर्या, साधनका स्वरूप -----	३७
श्रावकके तीन भेद -----	३९
द्वितीय अध्याय-----	४०-११९
गृहस्थधर्मपालनकी अनुज्ञा -----	४०
आठ मूलगुण-----	४१
स्वमत और परमतसे मूलगुण -----	४२
मद्यके दोष -----	४४
मांस भक्षणके दोष -----	४६
स्वयं मेरे प्राणीके मांसभक्षणमें दोष -----	४९
मांसभक्षणका संकल्प भी हानिकर -----	५१
मांस और अन्नमें अन्तर -----	५२

मधुके दोष -----	५३
मक्खनके दोष -----	५५
पाँच उदुम्बर फलोंके भक्षणमें दोष -----	५५
रात्रिभोजननिषेध -----	५६
पाँच पापोंके त्यागका अभ्यास भी आवश्यक -----	५९
जुआ आदि व्यसनोका निषेध -----	५९
प्राकारान्तरसे आठ मूलगुण -----	६३
द्विज जिनधर्मके श्रवणका अधिकारी कब -----	६४
जैनकुलमें उत्पन्न भव्योंका महत्त्व -----	६५
जैनेतर कुलमें उत्पन्न भव्योंका महत्त्व -----	६५
जैनेतर कुलमें उत्पन्न भव्योंका कर्तव्य -----	६७
आठ दीक्षान्वय क्रियाओंका वर्णन -----	६७
शूद्र भी यथायोग्य धर्मका अधिकारी -----	७०
नित्यपूजाका स्वरूप -----	७२
अष्टाह्निक, इन्द्रध्वज और महापूजाका स्वरूप -----	७३
कल्पद्रुम पूजाका स्वरूप -----	७४
जलादिपूजाका फल -----	७४
जिनपूजाकी सम्यक् विधि तथा उसका फल -----	७६
जिनपूजामें विघ्नोंको दूर करनेका उपाय -----	७८
स्नान करके ही पूजा करनेका अधिकार -----	७८
चैत्य आदिके निर्माणका विशेष फल -----	८०
कलिकालकी निन्दा -----	८१
कलिकालमें धर्मस्थितिका मूल जिनालय -----	८२
मुनियोंके लिए वसतिका -----	८३
स्वाध्यायशाला, बोजनशाला, औषधालयकी आवश्यकता -----	८३
जिनपूजकोंके सब कष्ट दूर -----	८४
जिनवाणीकी पूजाका विधान -----	८५
जिनवाणीके पूजक जिनपूजक ही हैं -----	८५
गुरु उपासनाकी विधि -----	८६
दान देनेका विधान तथा फल -----	८७
दानके अधिकारी-----	८८
समदतिका विधान -----	९०
जैनोंको दान देनेका महत्त्व -----	९०
नामादि निक्षेपसे चार प्रकारे जैनोंमें उत्तरोत्तर पात्रता -----	९०
भाव जैनको दान देनेका विशेष फल -----	९१

गृहस्थाचार्यको कन्यादि दान -----	९१
साधर्मिको कन्या देनेमें हेतु -----	९२
कन्यादानकी विधि और फल -----	९२
विवाहके भेद -----	९४
विवाहविधि -----	९५
योग्यकन्याके दाताको महान् पुण्यबन्ध -----	९७
सत्कन्याका पाणिग्रहण आवश्यक -----	९८
साधर्मिको धन देनेका विधान -----	१००
वर्तमान मुनियोंमें पूर्वमुनियोंकी स्थापना करके पूजनेका विधान -----	१००
ज्ञान और तप पूजनीय -----	१०२
पात्रदानका फल -----	१०३
उत्तम, मध्यम, जघन्य पात्रका स्वरूप और उनको दान देनेका फल -----	१०४
अपात्रदान व्यर्थ -----	१०८
भोगभूमिमें उत्पन्न जीवोंकी जन्मसे लेकर सात सप्ताह तककी अवस्थाका वर्णन -----	१०९
अन्नादि दानका फल -----	११०
मुनियोंको उत्पन्न करने और उन्हें गुणी बनानेके प्रयत्न करनेकी प्रेरणा -----	१११
दयादत्तिका विधान -----	११२
दिनमें भोजन करनेका विधान-----	११३
व्रतका स्वरूप -----	११४
विचारपूर्वक् व्रत लेना आवश्यक -----	११४
संकल्पी हिंसाके त्यागका उपदेश -----	११५
हिंस्र आदि प्राणियोंके वधका निषेध -----	११६
तीर्थयात्रादि करनेका उपदेश -----	११७
यश कमानेपर जोर -----	११८
यश कमाने का उपाय -----	११८
तृतीय अध्याय -----	१२०-१४४
नैष्ठिक श्रावकका स्वरूप -----	१२०
छह लेश्याओंका स्वरूप -----	१२१
नैष्ठिकके ग्यारह भेद -----	१२३
व्रतमें अतिचार लगानेवाला नैष्ठिक पाक्षिक होता है -----	१२३
दर्शनिकका स्वरूप -----	१२५
मद्य आदिके व्यापारका भी निषेध -----	१२६
मद्यादिके सेवन करनेवालोंके साहचर्यका निषेध -----	१२६
सब प्रकारके आचार आदिका निषेध -----	१२७
चमड़ेके पात्रमें रखे घी-तेल आदिका निषेध-----	१२७

पुष्पोके खानेका निषेध -----	१२९
अजानाफल, बैगन, कचरिया आदि खानेका निषेध -----	१२९
दिनके आदि तथा अन्तिम मुहूर्तमें भोजन करनेका निषेध -----	१३०
जलगालन व्रतके अतिचार -----	१३१
सात व्यसनोके उदाहरण -----	१३१
व्यसन शब्दकी निरुक्ति -----	१३३
यूतत्यागके अतिचार -----	१३४
वेश्याव्यसन त्यागके अतिचार -----	१३४
चौर्यव्यसन त्यागके अतिचार -----	१३५
शिकार खेलनेके त्यागके अतिचार -----	१३५
परस्त्रीव्यसन त्यागके दोष -----	१३५
अनारम्भवध और उत्कट आरम्भका निषेध -----	१३६
धर्मके विषयमें पत्नीको शिक्षित करनेका विधान -----	१३७
स्त्रीको शिक्षा -----	१३८
स्वस्त्रीमें अति आसक्तिका निषेध -----	१३८
कुलस्त्रीमें ही पुत्र उत्पन्न करने का विधान -----	१३९
बारह प्रकारके पुत्र -----	१३९
कुलस्त्रीकी रक्षाका विधान -----	१४०
वैद्यक लशास्त्रके अनुसार पुत्रोत्पादनकी विधि -----	१४१
सत्पुत्रकी आवश्यकता -----	१४३
चतुर्थ अध्याय-----	१४५-२०३
व्रतिक प्रतिमाका स्वरूप -----	१४५
निदानके भेद और उनका स्वरूप -----	१४५
तीन शल्य -----	१४६
शल्य सहचारी व्रतोंकी निन्दा -----	१४७
श्रावकके उत्तर गुण -----	१४७
सामान्यसे पाँच अणुव्रत -----	१४८
हिंसा आदिको स्थूल कहनेका कारण -----	१५२
अहिंसाणुव्रतका स्वरूप -----	१५३
नव संकल्प -----	१५४
घरमें रहनेवाले गृहस्थके अहिंसाणुव्रतका स्वरूप -----	१५५
स्थावर जीवोंकी भी हिंसा न करनेका विधान -----	१५५
संकल्पी हिंसाके त्यागका उपदेश -----	१५६
हिंसा क्यों छोड़ना चाहिए -----	१५६
अहिंसाणुव्रतका पालक कौन -----	१५७

अहिंसाणुव्रतके अतिचार -----	१५७
गाय-बैल आदिसे जीविका करनेका निषेध -----	१५९
अतिचार लक्षण -----	१६१
हिंस्य-हिंसक आदिका लक्षण -----	१६२
अहिंसाव्रतको निर्मल रखने की विधि -----	१६२
अहिंसाका पालन कठिन नहीं हैं -----	१६४
रात्रिमें चारों प्रकारके आहारका निषेध -----	१६५
रात्रिभोजनमें दोष -----	१६६
दृष्टान्त द्वारा रात्रिभोजन दोषकी महत्ता -----	१६७
अन्यमतोंमें भी रात्रिमें पात्रदान आदिका निषेध -----	१६८
रात-दिन खानेवाले पशुके तुल्य -----	१६९
रात्रि भोजन न करनेवालोंका आधा जीवन उपवासपूर्वक -----	१६९
भोजनके अन्तराय -----	१७०
मौनव्रतकी प्रशंसा-----	१७१
मौनव्रतका उद्यापन -----	१७३
मौन कब रखना आवश्यक है -----	१७४
सत्याणुव्रतका स्वरूप -----	१७४
सत्य-सत्य वचनका स्वरूप -----	१७७
असत्य-सत्य और सत्यासत्यका स्वरूप -----	१७८
असत्य-असत्यका स्वरूप -----	१७८
सत्याणुव्रतके अतिचार -----	१८०
अचौर्याणुव्रतका लक्षण -----	१८१
बिना दिये हुए तृणको भी ग्रहण करनेसे अचौर्य-व्रतभंग -----	१८२
गड़े धनका स्वामी राजा -----	१८३
सन्देहमें अपना धन लेनेसे भी व्रतभंग -----	१८३
अचौर्याणुव्रतके अतिचार -----	१८४
स्वदार सन्तोषाणुव्रत स्वीकारकी विधि -----	१८६
स्वदार सन्तोषीका स्वरूप -----	१८७
स्त्रीसम्भोग दुःखरूप -----	१८९
परस्त्रीरमणमें सुखका अभाव -----	१९०
स्वस्त्रीगमनमें भी हिंसा -----	१९१
ब्रह्मचर्यकी महिमा -----	१९१
ब्रह्माणुव्रतके अतिचार -----	१९२
परिग्रहपरिमाण अणुव्रतका स्वरूप -----	१९६
अन्तरंग परिषह -----	१९७

बहिरंग परिग्रहके त्यागकी विधि -----	१९८
परिग्रहके दोष -----	१९९
परिग्रहपरिमाण अणुव्रतके अतिचार -----	१९९
पंचम अध्याय -----	२०४-२५५
तीन गुणव्रत -----	२०४
दिग्विरतिव्रतका स्वरूप -----	२०५
दिग्व्रतसे अणुव्रती भी महाव्रतीके समान -----	२०६
दिग्वरितके अतीचार -----	२०७
अनर्थदण्डव्रतका लक्षण -----	२०८
पापोपदेशका स्वरूप -----	२०९
हिसोपकरणदानका स्वरूप -----	२१०
दुश्रुति-अपध्यानका स्वरूप -----	२१०
प्रमादचर्यका स्वरूप -----	२११
अनर्थदण्ड विरतिके अतिचार -----	२१२
भोगोपभोग परिमाणव्रत -----	२१४
भोग और उपभोगका लक्षण-----	२१४
भोगोपभोगपरिसंख्यानके पाँच भेद -----	२१५
भोगोपभोगपरिमाणमें त्याज्य वस्तु -----	२१७
अनन्तकाय और द्विदल त्याज्य -----	२१८
भोगोपभोगपरिमाणके अतीचार -----	२२०
भोगोपभोगपरिमाणमें त्याज्य खरकर्म -----	२२२
शिक्षाव्रत -----	२२६
देशावकाशिकव्रत -----	२२७
देशावकाशिकव्रतके अतीचार -----	२२९
सामायिकका स्वरूप -----	२३०
सामायिकका समय -----	२३२
सामायिकमें ध्येय -----	२३३
सामायिककी सिद्धिके लिए पूजादि आवश्यक -----	२३४
सामायिकके अतिचार -----	२३५
पोषधव्रतका लक्षण -----	२३६
मध्यम और जघन्य पोषध-----	२३७
पोषधकी विधि -----	२३९
पोषधमें कर्तव्य-----	२४०
पोषधोपवासके अतिचार -----	२४१
अतिथिसंविभागव्रतका लक्षण -----	२४२

अतिथि शब्दकी व्युत्पत्ति -----	२४२
पात्रका स्वरूप और भेद -----	२४३
पात्रदानकी विधि -----	२४४
देय द्रव्यका निर्णय -----	२४५
दाताका लक्षण -----	२४५
दानका फल -----	२४७
दानके फलके दृष्टान्त -----	२४९
अतिथिको खोजनेकी विधि -----	२४९
भूमि आदिके दानका निषेध -----	२५०
अतिथिसंविभाग व्रतके अतिचार -----	२५२
षष्ठ अध्याय (श्रावककी दिनचर्या) -----	२५६-२७८
प्रातःकालका कृत्य -----	२५६
कृतिकर्मका विधान -----	२५७
जिनालयको गमन -----	२५८
जिनालयमें प्रवेश विधि -----	२५९
पुण्यवर्धक स्तुतियाँ -----	२६०
जिनालयमें कर्तव्य -----	२६१
जिनालयमें वर्जित कार्य -----	२६३
व्यापार तथा उससे निवृत्ति -----	२६३
उद्यान भोजन आदिका निषेध -----	२६५
मध्याह्नमें देवपूजाकी विधि -----	२६५
तदनन्तर पात्रदान -----	२६७
सायंकालीन कृत्य करके शयन -----	२६९
रातमें नींद खुलनेपर चिन्तन -----	२७०
मुनि बननेकी भावना -----	२७६
सप्तम अध्याय -----	२७९-३०८
सामायिक प्रतिमाका स्वरूप -----	२७९
प्रोषधोपवास प्रतिमाका स्वरूप -----	२८१
सचित्तविरत प्रतिमाका स्वरूप -----	२८२
षष्ठ प्रतिमाका स्वरूप -----	२८५
रात्रिभक्तव्रत प्रतिमाके स्वरूपमें भेद -----	२८६
ब्रह्मचर्य प्रतिमाका स्वरूप -----	२८६
ब्रह्मचारीके भेद -----	२८७
वर्णाश्रम व्यवस्था -----	२८८
आरम्भविरतका स्वरूप -----	२९०

परिग्रहविरतका स्वरूप -----	२९१
परिग्रह त्याग या सकलदतिकी विधि -----	२९२
अनुमतिविरतका स्वरूप -----	२९५
उसकी विधि -----	२९६
गृहत्यागकी विधि -----	२९६
विनय और आचारमें भेद -----	२९८
उद्दिष्टविरतका स्वरूप -----	२९९
उद्दिष्टविरतके भेद और विधि -----	३००
प्रथमकी भिक्षाकी विधि -----	३००
दूसरेका स्वरूप -----	३०३
श्रावकके लिए निषिद्ध कार्य -----	३०४
अष्टम अध्याय -----	३०९-३५४
साधक श्रावकका स्वरूप -----	३०९
शरीरके लिए धर्मका घात निषिद्ध-----	३११
सल्लेखना आत्मघात नहीं -----	३१२
मृत्यु सुनिश्चित होनेपर सल्लेखनाका विधान -----	३१३
उपसर्गसे मरण होनेपर तत्काल सल्लेखना धारण करे -----	३१३
यथाकाल मृत्युमें सल्लेखनाकी विधि -----	३१४
आहारत्यागका समय -----	३१५
संघमें जानेका विधान -----	३१५
मरते समय धर्मासाधनाका फल -----	३१६
मुक्ति दूर होनेपर भी व्रतधारण आवश्यक -----	३१८
समाधि मरणके लिए शरीरको कृश करना आवश्यक -----	३१९
कषाय कृश किये बिना शरीर कृश करना व्यर्थ -----	३१९
समाधिमरणकी प्रशंसा -----	३२१
समाधिमरणके योग्य स्थान -----	३२२
सबसे क्षमा कराकर आचार्यसे अपने दोष निवेदन करे -----	३२३
पूरब या उत्तर को सिर करके लेटे -----	३२३
समाधिमरणके योग्य संस्तर -----	३२४
लिंगमें दोष होनेपर भी वस्त्रत्याग आवश्यक -----	३२४
आर्यिका भी अन्त समय वस्त्रत्याग करे -----	३२६
पाँच प्रकारकी शुद्धि -----	३२८
पाँच प्रकारका विवेक -----	३२८
समाधिमरणके अतिचार -----	३२९
संस्तरपर आरूढ़ होनेके पश्चात् निर्यापकाचार्यका कर्तव्य -----	३३०

आहारत्यागकी विधि -----	३३१
आहारत्यागके पश्चात् स्निग्धपान -----	३३३
अन्तमें गर्मजल -----	३३३
उसके पश्चात् समस्त आहारका त्याग -----	३३५
रोगादिकी अवस्थामें जलमात्र अन्तमें उसका भी त्याग -----	३३६
समस्त संघ ध्यानमें लीन रहे -----	३३६
निर्यापकाचार्यका सम्बोधन -----	३३७
सम्यक्त्वका माहात्म्य -----	३३८
अर्हद्भक्तिका माहात्म्य -----	३३९
भावनमस्कारका माहात्म्य -----	३३९
ज्ञानोपयोगका माहात्म्य -----	३४०
पाँच महाव्रतकोंका महत्त्व -----	३४१
व्यवहाराराधनाके पश्चात् निश्चय आराधनाका विधान -----	३४५
निश्चय संन्यासका स्वरूप -----	३४६
परीषह या उपसर्ग आनेपर बोध -----	३४६
निश्चय रत्नत्रयका स्वरूप और उसके धारणाकी प्रेरणा -----	३५०
विधिपूर्वक समाधिमरणसे आठवें भवमें मोक्ष -----	३५२
श्लोकानुक्रमणी -----	३५५
पद्यानुक्रमणी -----	३६१